CHAPTER 1, सूरदासकीझोंपड़ी

PAGE 10, प्रश्न - अभ्यास

12:1:1:प्रश्न - अभ्यास:1

, चूल्हा ठंडा किया होता, तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता?' नायकराम के इस कथन में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: नायकराम के इस कथन का निहितार्थ यह है कि सूरदास के घर में लगी आग उनके दुश्मनों के लिए बहुत खुशी की बात रही होगी। सूरदास के जलते घर को देखकर, जगधर ने अनुमान लगाया था कि सूरदास के चूल्हे में बचे कोयले से हवा के साथ उड़ कर आग लगी हो सकती हैं। इस अनुमान पर जगधर ने नायकराम से पूछा कि "सूरदास ने आज चूल्हा नहीं ठंडा किया, जिसके वजह से आग लग गयी है इस पर नायकराम ने जवाब दिया कि "यदि चूल्हा ठंडा हो गया होता, तो दुश्मनो का कलेजा कैसे ठण्डा होता? दूसरे लोग भी यही मान रहे थे कि चूल्हे में बची आग से घर जल गया है, लेकिन यह सच नहीं था। भैरों ने जानबूझकर बदला लेने के इरादे से सूरदास के घर में आग लगा दी

थी।नायकराम को ज्ञात था कि आग चूल्हे की वजह से नहीं है बल्कि किसी ने लगाई है।

12:1:1:प्रश्न - अभ्यास:2

भैरों ने सूरदास की झोपड़ी क्यों जलाई?

उत्तर: भैरों ने अपने झूठे अहंकार के कारण सूरदास को अपने दुश्मन के रूप में लिया था और उससे बहुत क्रोधित था, इतना कि उसने सुर दास जैसे गरीब का घर तक जला दिया। केवल एक छोटी सी बात थी: एक दिन जब भैरों और उसकी पत्नी सुभागी के बीच झगड़ा हुआ, तो गुस्से से सुभागी सूरदास के घर रहने के लिए चली गयी ,भैरो को यह पसंद नहीं आया। दूसरी ओर, सूरदास भी धार्मिक संकट की स्थिति में था, कैसे वह हताश सुभागी को बेसहारा कर दे। गरीब आदमी, इतना छल नहीं जनता था। विनम्रता से, सुभागी को मना नहीं कर पाया और उसे अपने घर में रहने दिया। यह भैरों के लिए असहनीय था, उसका मन बेचैन था। सूरदास के इस कार्य से उसे अपना अपमान महसूस हुआ और उसने सूरदास से बदला लेने का फैसला किया, हर हाल में सूरदास को सबक सिखाना चाहता था। जिस घर पर उसने सुभागी को

रखा था। भैरों ने उसी घर को जला दिया इस तरह उसने सूरदास की झोपड़ी में अपने तथाकथित अपमान का बदला लेने के लिए आग लगा दी।

12:1:1:प्रश्न - अभ्यास:3

'यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी।' संदर्भ सहित विवेचन कीजिए।

उत्तर: सूरदास एक अंधे भिखारी थे, उनके जीवन या उनकी संपत्ति का आधार कहा जाये तो उनके पास केवल एक छोटी सी झोपड़ी, ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा और जीवन भर की जमा की गयी वह पूंजी थी। जिसके लिए उनके मन में काफी अरमान थे। उनके जमींन पर गाँव के सभी जानवर चरते थे, सूरदास उसी से खुश था। झोपड़ी जल चुकी थी जिसे फिर से बनाया जा सकता था लेकिन उस आग में उसकी जमा पूंजी भी जलकर राख हो गई। वह इच्छाएँ जो उसने उस जमा पूँजी के साथ बाँधी थीं। वह जल कर राख हो गयी थी। वह ग्रामीणों के लिए एक कुआं बनाना चाहते थे, अपने बेटे की शादी करना चाहते थे और अपने पूर्वजों के पितृदान करना चाहते थे। उसकी कुल जमापूंजी पाँच सौ रुपये थी, जो फिर से

इतनी जल्दी जमा होना संभव नहीं था। झोपड़ी के साथ, यह अपनी संचित पूंजी भी जल जाने के कारण अपनी किसी भी आकांक्षा को पूरा नहीं कर सका, इसलिए उसने महसूस किया कि यह राख "फुस की राख नहीं बल्कि उसकी अभिलाषाओं की राख है "इस तरह की गतिविधि के कारण सूरदास के पास कुछ भी नहीं था, बस दुख और अफसोस के साथ राख में अपनी इच्छाओं की खोज कर रहा था।

12:1:1:प्रश्न - अभ्यास:4

जगधर के मन में किस तरह का ईर्ष्या-भाव जगा और क्यों?

उत्तर: सूरदास के घर में आग लगी और उसकी झोपड़ी जल कर राख हो गयी ये आग किसने लगवाई जब ये जगधर को पता चला तो वह भैरो के घर गया भैरो से मिलने पर पता चला की उसने बस आग ही नहीं लगवाई बल्कि सूरदास की पूरी जमा पूंजी भी हथिया ली है।
यानि सूरदास के पाँच सौ रुपये पर अब भैरू का कब्ज़ा था। भैरों के पास इतना रूपया देख जगधर को अच्छा नहीं लगा उसे लगने लगा की इतने पैसो से भैरों कि ज़िन्दगी की सारी

कठिनाई पल भर में दूर हो सकती है।भैरों की चांदी होते देख जगधर से रहा न गया,और वह मन ही मन भैरों से जलने लगा।जगधर के मन में भी लालच भर गया। वह भैरों के इतने रुपये लेकर आराम से ज़िन्दगी जीने के ख्याल से ही तड़प उठा ।भैरों की ये ख़ुशी जगधर के सबसे बड़े दुःख का कारण बन गई थी।

12:1:1:प्रश्न - अभ्यास:5

सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था?

उत्तर: सूरदास सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण अपने आर्थिक नुकसान को जगधर से गुप्त रखना चाहते थे। सूरदास एक अंधा भिखारी था जो लोगों की दया और उनकी दानशीलता पर पलता था, इसलिए लोगों को उसके पास इतनी संपत्ति होने पर आश्चर्य की बात हो सकती है। और लोगों को शक हो सकता है कि इसके पास इतना पैसा कहां से आया? वह जानता था कि एक भिखारी के पास इतना पैसा रखना सही नहीं है, लोग इसके बारे में विभिन्न तरीकों से बात कर सकते हैं। जब जगधर ने उनसे उन रुपयों के बारे में पूछा, तो

सूरदास हिचकिचा रहे थे, वे इसके बारे में जगधर को नहीं बताना चाहते थे। जब जगधर ने सूरदास को बताया कि पैसा अब भैरों के पास है, तो सूरदास ने उन रुपयों को अपना मानने से इनकार कर दिया। वह खुद को समाज के सामने शर्मिंदा नहीं करना चाहता था, वह जानता था कि कोई भी उसकी गरीबी का मजाक उड़ाएगा, अगर लोगों को पता चल गया की उसके पास इतना पैसा था। तो सूरदास लोगो को क्या जवाब देगा की उसके पास इतना पैसा कहाँ से आया। इसलिए वह चाहता था कि वह उसके नुकसान को गुप्त रखें ।

12:1:1:प्रश्न - अभ्यास:6

'सूरदास उठ खड़ा हुआ और विजय-गर्व की तरंग में राख के ढेर को दोनों हाथों से उड़ाने लगा।' इस कथन के संदर्भ में सूरदास की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर: सूरदास अपने जीवन की संचित पूंजी की चोरी से दुखी था, उसने महसूस किया कि उसके जीवन में कुछ भी नहीं बचा है। परेशानी, दुःख, ग्लानि और निराशा के भाव उसे हर पल महसूस हो रहे थे। अचानक उसने घीसू द्वारा मिठूआ को कहते सुना कि "खेल में रोते हो ", इस बयान ने अचानक

सूरदास के मूड पर एक चमत्कारी बदलाव किया। दुखी और निराश सूरदास फिर से जी उठा यह महसूस करते हुए कि जीवन संघर्षों का नाम है। जीवन में हार - जीत तो जारी रहेगा। व्यक्ति को चोटों और मेहनत से डरना नहीं चाहिए, और जीवन के संघर्षों का सामना करना चाहिए। जो मनुष्य जीवन के इस खेल को स्वीकार नहीं करता है, वह दुःख और निराशा के अलावा कुछ नहीं देता। घीसू के शब्द उसे समझाते हैं कि खेल में बच्चे भी रोना पसंद नहीं करते। वह फिर क्यों रो रहा है?सूरदास उठा और उसने दोनों हाथों से राख के ढेर को उड़ाना शुरू कर दिया। यह ऐसे शख्स की मनोदशा है जिसने हार का मुंह तो देखा लेकिन जिसने हार नहीं मानी बल्कि अपनी हार को जीत में बदल दिया।

12:1:1:प्रश्न - अभ्यास:7

'तो हम सौ लाख बार बनाएँगे।' इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र का विवेचन कीजिए।

उत्तर: इस कथन से सूरदास के चरित्र के निम्नलिखित बिंदुओं का पता चलता है:

(क) दृढ़-संकल्पी - सूरदास एक दृढ़निश्चयी व्यक्ति है जो थोड़े समय के लिए रुपये के नुकसान से दुखी था, लेकिन खेलते हुए बच्चों की बात ने उसे फिर से मजबूत कर दिया। मेहनती और हिम्मती आदमी गिर कर भी खड़ा हो सकता हैं और फिर उसने दृढ़ संकल्प के साथ समस्याओं का सामना करने की कसम खाई।

(ख) कठोर परिश्रमी - वह नियति के भरोसे रहने वाला आदमी नहीं था, उसे खुद पर पूरा भरोसा था और इसलिए उसने मिठुआ से वादा किया की जितनी बार उसकी झोपड़ी जलेगी, उतनी बार उसे फिर से खड़ा करेगा।

(ग) अडिग और निडर - दिव्यांग (अंधे) होने के बावजूद सूरदास कायर नहीं था। वह मुसीबतों का सामना करना जानता था। यहां तक कि ऐसे कठिन और प्रतिकूल समय में भी वह बिना किसी की मदद के खुद को संभालने की हिम्मत रखता है। बहादुरी न केवल युद्ध के मैदान में ही नहीं बल्कि जीवन में भी देखी जाती है। और इस मामले में सूरदास एक निडर व्यक्ति था।